सर्पदंश का प्रबंधनः उपचार व रोकथाम

डॉ. वी. वी. पिल्लै के साथ साक्षात्कार

डॉ. वी. वी. पिल्लै विष विज्ञान जैसे उपेक्षित विषय के विकास के लिए मेडिकल पेशेवरों के बीच अभियान चलाने में अग्रणी रहे हैं। विष विज्ञान और फोरेंसिक मेडिसिन पर उनके अनेक आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. पिल्लै फोरेंसिक मेडिसीन और विष विज्ञान पर छह किताबें लिख चुके हैं। कई पुरस्कारों से सम्मानित डॉ. पिल्लै ने एम्स में अत्याधुनिक विष नियंत्रण केंद्र स्थापित किया है जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन भी मान्यता दे चुका है। जुलाई 2004 में डॉ. पिल्लै ने इंडियन सोसाइटी ऑफ टॉक्सिकोलॉजी की स्थापना की। यह विष विज्ञान को पूरी तरह से समर्पित राष्ट्रीय पेशेवर संस्था है। यहां पेश हैं उनके साक्षात्कार के मुख्य अंशः

सवाल : सर्पदंश का प्रकोप कितना है?

डॉ. पिल्लै : इस मामले में हम कोई ठोस आंकड़ा नहीं दे सकते। सर्पदंश की कई घटनाएं आधिकारिक तौर पर दर्ज़ ही नहीं हो पाती हैं क्योंकि कई मामलों में पीड़ितों को पारंपरिक नीम-हकीमों के पास ले जाया जाता है जो ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं रखते। हालांकि विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि भारत में हर साल सर्पदंश की डेढ़ से दो लाख घटनाएं होती हैं और कम से कम 20 हज़ार लोगों की मौत हो जाती है। हाल ही में केरल में सर्पदंश के मामलों का सही-सही रिकॉर्ड रखने के कुछ प्रसास शुरू किए गए हैं। मुझे आश्चर्य नहीं होगा यदि केरल में सर्पदंश से होने वाली मौतों का सालाना आंकड़ा 500 से 1000 तक निकले।

सवालः इस ऊंची दर की वजह?

डॉ. पिल्लैः वाकई यह बहुत ही असामान्य बात है कि एक पूर्ण साक्षर राज्य में सर्पदंश की इतनी ज़्यादा घटनाएं और मौतें हो रही हैं। यह स्थिति तो उन अविकसित एशियाई देशों से भी बदतर है जहां सांपों की आबादी लगभग इतनी ही है। इसके कारणों की और पड़ताल की जानी चाहिए। लेकिन इससे भी पहले हमें ज़हरीले सांपों के दंश और उसके नियंत्रण के वैज्ञानिक पहलुओं के बारे में चर्चा करनी चाहिए।

सवालः विष विज्ञानी लोग सर्प के विष को लेकर इतने चिंतित क्यों रहते हैं?

डॉ. पिल्लैः मनुष्यों में सर्प के विष से बचने के लिए स्वयं में प्रतिरक्षा प्रणाली का अभाव होता है। अन्य ज़हरों के उलट सांप का ज़हर करीब 20 घटकों का जटिल मिश्रण होता है और प्रत्येक तत्व का मानव शरीर पर अलग-अलग ढंग से घातक असर पड़ता है। अलग-अलग प्रजाति के सांपों में ज़हर के घटक भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। सांप के ज़हर के खिलाफ कोई ऐसा अकेला अपने आप में संपूर्ण रासायनिक प्रतिविष नहीं है जिससे ज़हर के असर को खत्म किया जा सके। जब ज़हर रक्त संचार तंत्र में प्रवेश करता है, तब एंटीबॉडी का उत्पादन तो होता है, लेकिन यह प्रक्रिया बहुत धीमी होती है। यदि शरीर में पहुंचे ज़हर की मात्रा बहुत ज़्यादा है तो वह घातक साबित होगा।

सवालः समाधान क्या है?

डॉ. पिल्लैः सांप के ज़हर का सामना करने के लिए आधुनिक विज्ञान ने प्रतिरक्षा पद्धति के माध्यम से एक विज्ञानसम्मत तरीके का आविष्कार किया है। यह इस तरह से हैः घोड़े या भेड़ों को सर्प विष की सहन करने लायक मात्रा दी जाती है और उनके सीरम से एंटीबॉडी एकत्र कर ली जाती हैं। इन्हें परिशुद्ध एवं परिष्कृत करके 'एंटी-स्नेक

वेनम' (एएसवी) बनाया जाता है जिसे 'एंटीवेनिन' के नाम से भी जाना जाता है। इसी पद्धति के उन्नत संस्करण के रूप में सांपों की कई प्रजातियों के ज़हर की एंटीबॉडी एक साथ उत्पन्न कर ली जाती हैं, ताकि एक ही सीरम का इस्तेमाल अनेक प्रजातियों के सर्पदंश के खिलाफ किया जा सके। इसे 'पॉलीवैलेंट एंटीवेनिन' कहा जाता है।

एंटीवेनिन कोई दवा नहीं, बल्कि एक प्रकार का टीका है। यह विभिन्न जैविक अणुओं का एक पैकेज होता है जो प्रतिरक्षी ढंग से सक्रिय होते हैं। एंटीवेनिन देते ही उसके अणु विष के स्वतंत्र अणुओं से जुड़ जाते हैं और उन्हें निष्क्रिय कर देते हैं। एंटीवेनिन जितना जल्दी दिया जाएगा, नतीजा भी उतना ही अच्छा होगा क्योंकि विष के अणु शरीर के अणुओं से मिलकर घातक असर दिखाने लगते हैं। एंटीवेनिन इस प्रक्रिया को पलट नहीं सकता, वह तो सिर्फ विष के स्वतंत्र अणुओं को ही निष्क्रिय कर सकता है।

सवालः एंटीवेनिन के घटक प्रतिरक्षी ढंग से सक्रिय होते हैं। ऐसे में विपरीत प्रभाव की भी आशंका होगी?

डॉ. पिल्लैः हां, बिलकुल। पॉलीवैलेंट सीरम में करीब सौ जैविक घटक हो सकते हैं। इनमें से कुछ ही ज़हर को निष्क्रिय करने में काम आते हैं। बाकी का विपरीत असर पड़ सकता है। करीब 20 फीसदी मामलों में विभिन्न विपरीत प्रभाव देखने में आते हैं।

सवालः क्या यह एक समस्या नहीं है?

डॉ. पिल्लैः इसके दूसरे पहलू को देखें। पॉलीवेनिन का इस्तेमाल जानलेवा विष से बचाने में किया जाता है। 80 फीसदी मामलों में बगैर किसी दिक्कत के जान बचा ली जाती है। केवल 20 फीसदी मामलों में ही विपरीत असर होता है और वह भी बहुत हल्का। एंटीवेनिन से उपचार करते समय समुचित सावधानी बरतने से विपरीत प्रभावों से बचा जा सकता है।

सवालः एएसवी उपचार की तुलना पारंपरिक उपचार से कैसे करेंगे?

डॉ. पिल्लैः विष विज्ञान में 'पारंपरिक' और 'आधुनिक' जैसे विभाजनों को मैं उचित नहीं मानता। मौजूदा ज्ञान को 'समकालीन' कह सकते हैं। प्राचीन ज्ञान अपने ज़माने में 'समकालीन' था। इस बीच नया ज्ञान विकसित हुआ। जब करीब एक सदी पहले एंटीवेनिन आया तो यह तत्कालीन उपचारों से ज़्यादा प्रभावी सिद्ध हुआ। इसे इसके असर और विश्वसनीयता की वजह से स्वीकार किया गया।

सवालः एंटीवेनम के शानदार प्रदर्शन और विश्वसनीयता का कोई उदाहरण?

डॉ. पिल्लैः पूरी दुनिया के आंकड़े दर्शाते हैं कि एएसवी के आविष्कार के बाद सर्पदंश से होने वाली मौतों की संख्या में भारी गिरावट आई है। अब विकसित देशों में सर्पदंश से कभी-कभार ही मौत होती है। एएसवी से उपचार पूरी तरह से प्रमाणित है। यदि वाइपर जैसे बेहद ज़हरीले सांप के काटे व्यक्ति को आधे घंटे के भीतर हमारे केंद्र में लाया जाए तो मैं उसकी जान बचाने की गारंटी देता हूं।

सवालः तो फिर केरल में सर्पदंश से इतनी ज़्यादा मौतें क्यों होती हैं?

डॉ. पिल्लैः तथ्य यह है कि 99.9 फीसदी मामलों में मौत को टाला जा सकता है। इस भयावह स्थिति के लिए कई कारक ज़िम्मेदार हैं, जैसे लोगों में जागरूकता का अभाव, गलत प्राथमिक चिकित्सा, उचित उपचार प्रदान करने में देरी, गलत उपचार इत्यादि। जैसे, केरल में शिक्षा के उच्च स्तर के बावजूद लोगों में सर्पदंश के बारे में कई गलत धारणाएं हैं। सांप को लेकर उनके दिमाग में एक भय बैठा हुआ है। सांप के काटने के बाद कई लोग यह मान लेते हैं कि उनका अंतिम समय आ गया है। यहां तक कि विषहीन सांप के काटने पर भी कई बार डर की वजह से लोग सदमे में आ जाते हैं। दरअसल, आंकड़े बताते हैं कि सर्पदंश के 70 फीसदी मामले विषहीन सांपों के काटने के होते हैं। शेष 30 फीसदी सर्पदंश की घटनाओं में भी करीब आधे मामलों में ही शरीर में इतना ज़हर पहुंच पाता है कि कोई विशेष शारीरिक समस्या पैदा होती है। इसका मतलब है कि सर्पदंश के 85 फीसदी मामलों में केवल प्राथमिक देखभाल की ज़रूरत होती है और महज़ 15 फीसदी मामलों में ही विशेष उपचार आवश्यक होता है। समय पर पॉलीवेनिन देने से घातक से घातक सांप के ज़हर को भी पूरी तरह से निष्प्रभावी किया जा सकता है।

पीड़ित व्यक्ति के डर की वजह से कई बार चिकित्सक भी भ्रमित हो जाता है और इससे रोगी में स्वास्थ्य सम्बंधी अनावश्यक समस्या पैदा हो जाती है। आसपास मौजूद लोगों में जागरूकता की कमी से भी समस्या और बढ़ जाती है और गलत प्राथमिक उपचार की वजह से मामला बिगड़ जाता है। कई लोग मरीज़ को निगरानी में रखने और यह पता चलने के बाद कि उसे ज़हरीले सांप ने नहीं काटा है, एंटीवेनिन नहीं देने के चिकित्सक के निर्णय में अनावश्यक दखल देते हैं। निगरानी बहुत महत्वपूर्ण होती है और एंटीवेनिन उपचार तत्काल शुरू करना ज़रूरी नहीं होता है। विषहीन सांप के काटने पर एंटीवेनिन देना व्यर्थ और कई बार घातक भी होता है।

सवाल : घटना स्थल पर ही सर्पदंश से ग्रस्त व्यक्ति को प्राथमिक चिकित्सा देने में गलत क्या है?

डॉ. पिल्लै : यह बहुत ही जटिल मामला है। प्राथमिक उपचारों में जो बहुत प्रचलित हैं, उनमें शामिल हैं - सांप ने जिस जगह काटा है, उसके ऊपर किसी कपड़े इत्यादि से कसकर बांध देना, सर्पदंश के स्थान पर चूसकर ज़हर खींचने की कोशिश करना, सर्पदंश के निशान के पास चीरा लगाकर खून बहाना, घाव को धोना इत्यादि। इनका मकसद घाव से ज़हर को बाहर निकालना, सर्पदंश के स्थान पर ज़हर को निष्प्रभावी करना और उसे शरीर में फैलने से रोकना होता है। कुछ दशक पहले तक ये मान्य थे, लेकिन कई मामलों के अध्ययन के बाद पता चला है कि मान्य प्राथमिक उपचार उतना प्रभावी नहीं रहता है, जितना कि हम सोचते हैं। बगैर किसी प्रशिक्षण के इन विधियों को अपनाया जाए तो नुकसान ज़्यादा हो सकता है।

सवालः और विस्तार से समझाइए।

डॉ. पिल्लै : किसी अंग को कसकर बांधने से रक्त धमनियां, लसिका नलिकाएं (लिम्फेटिक वेसल्स) और तंत्रिकाएं अवरुद्ध हो जाती हैं। यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहे, तो जहां कपड़ा बांधा गया है, उससे नीचे का अंग जैविक रूप से निष्क्रिय हो सकता है। मैंने ऐसे मामले देखे हैं जिनमें कसकर बांधने की वजह से पीड़ितों के अंगों ने काम करना बंद कर दिया, जबकि उन्हें काटने वाला सांप विषधर भी नहीं था। याद रखें, अंग को कपड़े से बांधने से केवल ज़हर के फैलने की प्रक्रिया धीमी होती है, उसके फैलाव को पूरी तरह से रोका नहीं जा सकता। कपड़ा बांधा जा सकता है, लेकिन बहुत कसकर नहीं। कपड़ा इतना ही कसकर बांधा जाना चाहिए कि उसके भीतर एक उंगली जा सके। एक के ऊपर दूसरा, तीसरा कपड़ा तो बिलकुल नहीं बांधना चाहिए।

सवालः अन्य तकनीकों के बारे में क्या कहेंगे?

डॉ. पिल्लै : ज़हर को चूसकर बाहर खींचने की तकनीक थोड़ी उपयोगी हो सकती है, लेकिन यदि दंश नुकीले दांतों से गहराई में हुआ है तो फिर इसका कोई फायदा नहीं होगा। इससे ज़हर के केवल एक छोटे से अंश को ही बाहर निकाला जा सकता है। ऐसा भी देखा गया है कि लोग सर्पदंश के घाव को पोटेशियम परमैंग्नेट या डेटॉल से धो देते हैं ताकि ज़हर बह जाए अथवा उसका असर खत्म या कम हो जाए। लेकिन जीवाणुनाशी पदार्थों से ज़हर पर कोई फर्क नहीं पड़ता है, बल्कि इससे लसिका प्रणाली (लिम्फेटिक सिस्टम) और ज़्यादा सक्रिय हो जाती है और ज़हर का प्रवाह बढ़ जाता है। उस स्थान पर चीरा लगाने और खून बहाने से गंभीर जटिलताएं पैदा हो सकती हैं, इसलिए इनसे बचना चाहिए। यदि सर्पदंश ज़हरीला नहीं है तो यह अनावश्यक कवायद ही होगी।

सवालः क्या गलत प्राथमिक उपचार से गंभीर समस्याएं पैदा हो सकती हैं?

डॉ. पिल्लैः यह ऊपर से जितनी आसान लगती है, उतनी है नहीं और इससे अनजाने में ही कई नुकसान हो जाते हैं। हमारे पास कई मामले ऐसे आते हैं जो गलत प्राथमिक उपचार की वजह से काफी जटिल हो जाते हैं। इसके अलावा सुनी-सुनाई बातों के आधार पर स्थानीय स्तर पर उपलब्ध 'रामबाण उपचार' देने की भी प्रवृत्ति होती है। इस उपचार में तथाकथित जड़ी-बूटियां और खनिज लवण दिए जाते हैं, लेकिन इससे होता यह है कि बाद में चिकित्सक के लिए वास्तविक लक्षणों को पहचानने और सही दवाई देने में दिक्कत पैदा हो जाती है। यही नहीं, ऐसी कवायदों में जो समय बर्बाद होगा, उससे एंटीवेनम उपचार में विलंब होगा।

समय बहुत मायने रखता है। एंटीवेनम उपचार जल्द से जल्द शुरू करना ज़रूरी है, ताकि ज़हर के घटक शरीर के अणुओं के साथ न जुड़ पाएं। गौरतलब है कि एंटीवेनिन ज़हर के केवल स्वतंत्र घटकों को निष्प्रभावी करता है, अणुओं के साथ जुड़े हुए घटकों को नहीं।

इसलिए, यदि आप सर्पदंश की प्राथमिक चिकित्सा देने के लिए प्रशिक्षित नहीं हैं तो अच्छा यही होगा कि घटना स्थल पर आप कुछ न करें। रोगी को पास के ही किसी अस्पताल में ले जाएं। जितना संभव हो सके, रोगी को चलने-फिरने न दें। उसे आश्वस्त करें कि सांप ज़हरीला नहीं था। अस्पताल ले जाने के दौरान रोगी के शारीरिक लक्षणों (जैसे पलकों के भारीपन वगैरह) के बारे में चिकित्सक को बताएं।

सवालः क्या सांप को पकड़कर साथ ले जाना ज़रूरी नहीं है?

डॉ. पिल्लैः अब यह पुराने ज़माने की बात रह गई है। एंटीवेनिन उपचार के शुरुआती दिनों में केवल मोनोवैलेंट एंटीवेनिन ही उपलब्ध था और इसलिए सांप की पहचान ज़रूरी होती थी। लेकिन आजकल पॉलीवैलेंट एंटीवेनिन बहुत प्रचलित है और यह सभी चार संभव ज़हरीली प्रजातियों के दंश में काम आता है। लिहाज़ा सांप की पहचान से अब कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता है। एक प्रशिक्षित चिकित्सक रोगी के लक्षणों के आधार पर ही इस बात की पहचान कर लेगा कि किस तरह का ज़हर शरीर में गया है। इसलिए सांप को लाना बिलकुल भी ज़रूरी नहीं रह गया है। सांप को पकड़ने की कोशिश न ही करें तो बेहतर होगा क्योंकि इस चक्कर में वह और लोगों को काट सकता है। इसके अलावा सांप के पीछे भागने से रोगी की चिकित्सा में भी अनावश्यक देरी होगी। इसलिए मेरी सलाह यही है कि सांप को उसके प्राकृतिक आवास में ज़िंदा ही रहने दें। यदि वह अपने प्राकृतिक आवास को छोड़कर आपके घर में घुस आया है तो उसे बस भगा दें। किसी मनुष्य को काटने का मतलब यह नहीं है कि उसे मार दिया जाए, क्योंकि कुतरने वाले जानवर या सरीसृप जब स्वयं को खतरे में महसूस करते हैं, तो दंश मारना उनकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया होती है। और यह भी याद रखिए - सांपों को मारना इकॉलॉजी और वन्य जीवन दोनों ही नज़रियों से गलत है। इकॉलॉजी में सांप बहुत ज़रूरी है, क्योंकि वे चूहे जैसे कई नुकसानदायक जीवों का शिकार करते हैं। इसके अलावा सांपों को भारतीय वन्य जीव संरक्षण कानून की अनुसूची 2 में भी शामिल किया गया है।

सवालः घटना स्थल पर मौजूद लोगों की क्या भूमिका हो सकती है?

डॉ. पिल्लैः घटना स्थल पर मौजूद व्यक्ति रोगी को ढाढ़स बंधाने के लिए बहुत कुछ कर सकता है। विषहीन सांप के काटे अधिकांश रोगियों को केवल इसलिए भर्ती किया जाता है कि वे बहुत ज़्यादा घबरा जाते हैं। भावनात्मक सहारा और आशावादी सोच सबसे ज़्यादा ज़रूरी होता है। यहां तक कि विषधारी सांप के काटने की स्थिति में भी यदि रोगी हौसला बनाए रखे तो वह उतनी ही जल्दी ठीक हो सकेगा। रोगी को आश्वस्त करें कि दंश नुकसानरहित है। यदि आप जानते हैं कि जिस सांप ने काटा है, वह ज़हरीला है तब भी झूठ का सहारा लेना चाहिए। सारे लक्षणों पर नज़र रखें और अन्य जानकारी (जैसे दंश का सटीक समय इत्यादि) नोट करें। यह काफी उपयोगी हो सकता है।

सवालः आम धारणा है कि चिकित्सक मरीज़ को निगरानी में रखकर उपचार शुरू करने में अनावश्यक विलंब करते हैं। आपका क्या विचार है?

डॉ. पिल्लैः हां, यह सच है लेकिन ऐसा 'उपचार प्रोटोकॉल' के तहत किया जाता है। सही उपचार करने के लिए विभिन्न लक्षणों का बारीकी से मूल्यांकन ज़रूरी है। ज़हर को निष्प्रभावी करने के अलावा सम्बंधित लक्षणों का भी उपचार किया जाता है। कुछ लक्षण रोगी के भय की वजह से भी पैदा हो जाते हैं। ऐसे में यह देखना ज़रूरी होता है कि क्या लक्षण वाकई ज़हर की वजह से पैदा हुए हैं। केवल भय की वजह से पैदा हुए लक्षणों में अनावश्यक एंटीवेनिन देने से बचा जाता है, ताकि उसके प्रतिकूल प्रभावों के खतरे को कम किया जा सके।

मुझे लगता है कि विषहीन दंश के मामलों में एंटीवेनिन न देने के चिकित्सक के इसी निर्णय की वजह से लोगों में गलत धारणा बनती है। यदि मामला वाकई विषधारी सर्पदंश

का है तो उपचार निगरानी के साथ ही शुरू कर दिया जाएगा। आम तौर पर सर्पदंश के शिकार लोगों को 24 घंटे तक निगरानी में रखा जाता है। ऐसा इसलिए किया जाता है क्योंकि कभी-कभार ज़हर का असर देर से शुरू होता है।

सवालः क्या सर्पदंश उपचार में विशेष प्रशिक्षण की ज़रूरत है?

डॉ. पिल्लैः सर्पदंश उपचार ऐसा क्षेत्र नहीं है जिसमें विशेषज्ञता की ज़रूरत हो। कोई भी योग्य मेडिकल ऑफिसर रोगी का परीक्षण कर सकता है, उसे एंटीवेनिन दे सकता है और प्रतिकूल स्थितियों में उसका उपचार कर सकता है। यदि स्टॉक में एंटीवेनिन और इमरजेंसी उपचार के लिए आवश्यक दवाइयां व सुविधाएं उपलब्ध हैं तो सर्पदंश का उपचार बहुत ही आसान है।

सवालः आम तौर पर देखा गया है कि सर्पदंश के गंभीर मामलों को छोटे अस्पताल स्वीकार नहीं करते हैं, यहां तक कि प्राथमिक चिकित्सा के लिए भी राज़ी नहीं होते व उन्हें बड़े अस्पतालों को रेफर कर देते हैं।

डॉ. पिल्लै : यह बहुत भी दुर्भाग्यपूर्ण है और यही बात ऐसे तमाम हादसों में होती है जिनमें पीड़ित मरणासन्न अवस्था में होता है। संभवतः लोग कानूनी पचड़ों से डरते हैं। दरअसल मौतों की दर में बढ़ोत्तरी की यह भी एक वजह है।

सवालः हम एक बार फिर उच्च मृत्यु दर के मुद्दे पर पहुंच गए हैं। आखिर इसका समाधान क्या है?

डॉ. पिल्लै : ऊपर जिन मुद्दों की चर्चा की गई है, उनका समाधान किया जा सकता है, लेकिन धीरे-धीरे और लोगों को शिक्षित करके। कुछ अन्य मसलों को केवल सरकारी दखल से ही सुलझाया जा सकता है। हम क्लीनिकल एवं वैज्ञानिक जानकारी एकत्र कर रहे हैं ताकि उपचार की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सके। देश-विदेश के विभिन्न विशेषज्ञों के विचार जानने के लिए सर्पदंश सम्मेलन आयोजित किए जा रहे हैं। इस कार्य में विश्व स्वास्थ्य संगठन भी मदद कर रहा है। रोकथाम, प्राथमिक चिकित्सा और उपचार को लेकर संशोधित प्रोटोकॉल बनाकर सरकार को प्रस्तुत किया जा चुका है। उम्मीद है कि जल्दी ही इसे लागू कर दिया जाएगा।

सवालः जहां विकसित देशों ने सर्पदंश के विश्वसनीय उपचार में सफलता हासिल कर ली गई है, हमारे देश में स्थिति वही बनी हुई है। क्या सरकार के स्तर पर ही कोई कमी है?

डॉ. पिल्लै : इसे कमी नहीं कह सकते। हमारे समाज में इसे कभी गंभीरता से लिया ही नहीं गया। पारंपरिक धारणा में हम सर्पदंश को व्यक्तिगत हादसा मानते हैं। पीड़ित व्यक्ति जी जाए या मर जाए, वह उसकी किस्मत! इसलिए इस पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। इस सिलसिले में सरकार उपचार केंद्रों की स्थापना और वहां निःशुल्क एंटीवेनिन की आपूर्ति करके अपनी ओर से हर संभव प्रयास कर रही है। केरल जैसे छोटे-से राज्य में भी यदि सांप के काटने की 10 से 20 हज़ार घटनाएं होती हैं तो यह इस बात की ओर इंगित करता है कि सर्पदंश की समस्या को जन स्वास्थ्य समस्या माना जाना चाहिए। मृत्यु दर के मद्देनज़र तो यह संभवतः सबसे गंभीर समस्या है। इस समस्या के विभिन्न पहलुओं पर हमें और अध्ययन करने की ज़रूरत है। सर्पदंश के बारे में हमारे पास न तो रोग प्रसार सम्बंधी अध्ययन हैं और न ही अनुसंधान के आंकड़े।

सवालः बचाव के लिए क्या किया जा सकता है?

डॉ. पिल्लैः हां, बचाव को सबसे ज़्यादा महत्व दिया जाना चाहिए। उचित दिशा-निर्देश बेहद ज़रूरी हैं।

गौरतलब है कि सर्पदंश की घटनाएं कुछ निश्चित गतिविधियों के आसपास, कुछ निश्चित क्षेत्रों में, कुछ निश्चित समयों पर होती हैं। केरल के अध्ययनों से ये तथ्य सामने आए हैंः

- घास की कटाई और निंदाई के दौरान सर्पदंश की घटनाएं ज़्यादा होती हैं।
- रबर, नारियल और सुपारी की बागवानी में खाद बिछाने के लिए पेड़ों के आधार की सफाई करते समय भी सर्पदंश की काफी घटनाएं होती हैं।
- तड़के (3 से 6 बजे सुबह) रबर एकत्र करने और सब्ज़ियां काटने व फलों की तुड़ाई के दौरान भी सर्पदंश की घटनाएं ज़्यादा होती हैं।
- चाय और कॉफी बागानों के श्रमिक पत्तियां तोड़ते समय वाइपरों की शांति में विघ्न डालने का खतरा उठाते हैं।

- रात को टॉर्च के बगैर, नंगे पैर अथवा केवल सैंडल या चप्पल पहनकर घर के बाहर जाने की वजह से।
- शाम के समय तालाबों, झरनों या नदियों में स्नान के दौरान भी सर्पदंश की घटनाएं होती हैं। आम धारणा यह है कि पानी में काटने वाले सांप ज़हरीले नहीं होते हैं, जबकि तथ्य यह है कि कोबरा और अन्य ज़हरीले सांप पानी में प्रवेश कर सकते हैं और वे काफी अच्छे तैराक होते हैं।
- तालाब या नदी के किनारे भी सर्पदंश का खतरा होता है।

रोकथाम के कुछ उपाय इस तरह हैं:

- रात के समय जूते या बूट पहनकर ही बाहर जाएं और साथ में हमेशा टॉर्च रखें जिसका स्विच ऑन हो।
- घास की कटाई अथवा फल या सब्ज़ियों की तुड़ाई या पेड़ों का आधार साफ करने के दौरान अपने साथ एक डंडा रखें। सबसे पहले डंडे से घास या पत्तियों को हिलाएं। सांप को भागने का मौका दें।
- ज़मीन पर पड़ी लकड़ियां बीनते समय पत्तियों व डंठलों को ध्यान से देखें कि कहीं वहां सांप तो नहीं है।
- मवेशियों का चारा या खाद्य सामग्री और कचरा अपने घर से दूर रखें। इससे चूहे आकर्षित होते हैं जिन्हें खाने के लिए अंततः सांप भी आएंगे।
- ज़मीन पर सोने से बचें।
- घरों के दरवाज़ों और खिड़कियों के पास पौधे नहीं होने चाहिए। सांप छिपने की जगह चाहते हैं और पौधों के ज़रिए उन्हें खिड़कियों से घर के अंदर आने में मदद मिलती है। ***(स्रोत फीचर्स)***